कुमारप्पा ग्राम स्वराज संस्थान

वार्षिक प्रतिवेदन वर्ष 2022–2023

समीक्षा वर्ष 2022–2023 में संस्थान द्वारा जो कार्य किये गये उसकी जानकारी प्रस्तुत है। कार्य को मुख्य तौर पर निम्नलिखित वर्गों में विभाजित करना चाहेंगे –

(क) जिन कार्यक्रमों को इस अवधि में किये गये उनकी रिपोर्ट तैयार करना। सामान्यतः सी.एस.आर. या अन्य माध्यमों से आर्थिक सहायता प्राप्त होती है, उसे सरकार के नियमानुसार त्रैमासिक रिपोर्ट तैयार करना आवश्यक हो गया है। संक्षेप में कहें कि सरकार के नये प्रावधानों में कागजी कार्यवायी काफी बढ़ गयी है। इस स्थिति में गांवों में कार्य करनेवाले कार्यकर्ताओं एवं केन्द्रीय स्तर पर कार्यालय में इस कार्य में पहले से अधिक समय एवं शक्ति लगती है। (ख) इस अवधि में देश के औद्योगिक प्रतिष्ठानों तथा अन्य देशों से एफ.सी.आर. कानून की सीमा में कुछ योजनाओं के लिए कार्यों के लिए आर्थिक साधन प्राप्त हुए हैं। (ग) कुछ स्थानीय स्तर पर भी आर्थिक साधन प्राप्त हुए जिससे गांधी विचार प्रचार एवं लोक शिक्षण–जागरूकता संबंधी कार्य किये गये। विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत है –

1. वर्षा जल का कुँओं में पुर्नभरण (सिंचाई) कार्यक्रम

यह कार्यक्रम उसी समय किया जाना संभव होता है जबकि खेत में फसल नहीं हो। अतः मई, जून, जुलाई एवं अगस्त की अवधि में (क) कार्य निर्माण तथा (ख) वर्षा होने पर पानी का आवक, बनाये गये कार्य की सुरक्षा, कुँओं में पानी की स्थिति, दूसरे कुँओं पर प्रभाव देखना आदि महत्वपूर्ण कार्य किये जाते हैं। इन कार्यों में कार्यकर्ताओं की पूरी समय–शक्ति लगती है। इस कार्य के लिए बजाज आटो लिमिटेड एवं टी.आर. एफ. संस्था से आर्थिक सहयोग प्राप्त हो रहा है। यह कार्य चाकसू–कोटखावदा क्षेत्र में किये जा रहे हैं। समीक्षा अवधि में 17 कुँओं पर वर्षा जल पुर्नभरण का कार्य किया गया।

कार्यक्रम के लिए कुएँ का चयन की लम्बी प्रक्रिया है जिसमें समय–शक्ति लगती है, जैसे वर्षा के समय वर्षा जल के बहाव की स्थिति और यह देखना कि वह पानी को कुआँ तक ले जाया जा सकता है या नहीं। अतः वर्षा जल का बहाव एवं कुआँ के स्थान की अनुकूलता देखना। सामान्यतः एक कुएँ में एक से अधिक परिवारों की भागीदारी रहती है। अतः सभी भागीदार की सहमति लेना आवश्यक होता है। इसके

लिए सभी की एक राय बनाने में मददगार होना पड़ता है। पाया गया कि एक कुएँ में इस कार्य का अनुकूल प्रभाव पास के अन्य कुँओं पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

समीक्षा वर्ष में कुल 17 कुँओं पर यह कार्य पूरा किया गया। वर्ष 2022–23 में विभिन्न फसलों के उत्पादन पर प्रभाव तथा कुआँ में जल की स्थिति आदि को नीचे की सारणी में देखा जा सकता है। इस वास्तविक स्थिति से इस परियोजना के लाभ एवं उपयोगिता को भी समझा जा सकता है।

वर्ष 2022–2023 में कार्य के प्रभाव की स्थिति

क्र.सं.	विवरण	प्रभाव की स्थिति
1.	लाभांवित कुँओं की संख्या	17
2.	लाभांवित परिवारों में सदस्यों की संख्या	601
3.	कुँओं की औसत गहराई	107 फुट
4.	कुँओं में पानी की औसत मात्रा	
	कार्य के पहले	4.23 फुट
	कार्य के बाद	5.88 फुट
5.	कुआँ में पानी बढ़ने की औसत प्रतिशत	39 प्रतिशत
6.	कुआँ पर इंजन चलने का समय	
	कार्य के पहले	106 मिनट
	कार्य के बाद	187 मिनट
7.	इंजन चलने में वृद्धि का प्रतिशत	76.41 प्रतिशत
8.	कुल सिंचित क्षेत्र (बीघा में)	
	कार्य के पहले	134 बीघा
	कार्य के बाद	179 बीघा
9.	कुल सिंचित क्षेत्र में वृद्धि प्रतिशत	33.58 प्रतिशत
10.	सिंचित क्षेत्र से आय – रू. में	
	कार्य के पहले	26,80,000/–
	कार्य के बाद	35,80,000/–
11.	प्रति लाभांवित को प्रति वर्ष आय में वृद्धि रू.	52,941/–

उपरोक्त सारणी वर्षा जल का कुंओं में पुर्नभरण के प्रभाव को दर्शाता है। यह जानकारी संस्था के कार्यकर्ता एवं लाभांवित परिवारों के साथ तथ्यात्मक स्तर पर ली गयी है।

2. ईट भट्टे पर कार्य कर रहे परिवार के बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा

मकान निर्माण के लिए ईट बनाने, पकाने एवं बिक्री का व्यवसाय व्यापक स्तर पर चलता है। प्रारंभिक स्तर पर यह कार्य मिट्टी से ईट बनाने का होता है जिसमें श्रमिक ईट बनाने के स्थान पर रहते हैं–वहीं उनका निवास होता है और कार्य का स्थान भी। राजस्थान में यह कार्य भरतपुर, अलवर, जयपुर जिलों में व्यापक स्तर पर किया जाता है। कुमारप्पा ग्राम स्वराज संस्थान ने प्रारंभिक सर्वेक्षण में पाया कि श्रमिक यहाँ (क) सपरिवार रहते हैं जिसमें महिला, पुरुष एवं बच्चे शामिल हैं। (ख) छोटे बच्चे पढ़ाई से वंचित रहते हैं क्योंकि यह कार्य गांव से दूर होता है जहाँ जाकर पढ़ना उनके लिए संभव नहीं। दूसरा बड़ा कारण यह है कि श्रमिक साल में 6–7 माह ही यहाँ रहते हैं, फिर काम बन्द हो जाता है और श्रमिक सपरिवार अपने गांव चले जाते हैं। (ग) इस परिस्थिति में स्थानीय विद्यालय में बच्चों का प्रवेश नहीं मिल पाता है। उपरोक्त परिस्थिति को देखते हुए कुमारप्पा ग्राम स्वराज संस्थान ने ईट भट्टे स्थल पर ही उनकी शिक्षा की व्यवस्था करने का निर्णय लिया। आर्थिक दृष्टि से इस कार्य के लिए सं.रा. अमेरिका की ''आशा'' संस्था ने आर्थिक सहायता उपलब्ध किया। यह संस्था कई स्तर पर आर्थिक साधन जुटाने के लिए कार्यक्रम आयोजित करती है। कार्यक्रम में जुटे आर्थिक साधन शिक्षा संबंधी कार्य के लिए सक्षम संस्थाओं को दिया जाता है। इस कार्य के लिए एस.जे.एस इंटरप्राइजेज लि. के आर्थिक सहयोग से भी जयपुर जिले के चाकसू–कोटखावदा एवं फागी क्षेत्र में ईट भट्टे पर रह रहे विस्थापित बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी है। पढ़ाई के मुख्य विषय रखा गया है – अक्षर

ज्ञान, हिन्दी और गणित। विद्यार्थियों की योग्यता के अनुरूप प्रारंभ से पांचवीं कक्षा स्तर तक पढ़ाने की व्यवस्था है।

समीक्षा वर्ष में 17 ईट भट्टों पर इस प्रकार का अरण्य विद्यालय चल रहा है। इस अवधि में यहाँ कुल 754 छात्र–छात्राएँ पढ़ाई कर रहे हैं – इनमें लड़कियों की संख्या 50 प्रतिशत है। यहाँ की व्यवस्था इस प्रकार है –

(1) ईट भट्टों का चयन–प्रयास रहता है कि ईट मालिक की सहमति एवं सहयोग रहे।

(2) शिक्षकों का चयन। इस कार्य में स्थानीय शिक्षक रखे जाते हैं ताकि अवकाश एवं दूर से आने की समस्या नहीं रहे।

(3) प्रायः सभी शिक्षक–शिक्षिकाएँ बी.एड. हैं।

(4) चयनित शिक्षकों को प्रारंभ में अल्पकालीन प्रशिक्षण दिया जाता है। इस कार्य में राष्ट्रीय स्तर पर इस क्षेत्र में कार्य कर रही ''प्रथम'' संस्था का सहयोग रहता है। पाठ्य पुस्तकें भी इसी संस्था से ली जाती है। समय–समय पर ''प्रथम'' संस्था के विशेषज्ञ ईट भट्टे पर स्थित विद्यालय में जाकर कार्य में गतिशीलता लाने का कार्य करते हैं।

(5) इस कार्य में ईट भट्टे के मालिक का सहयोग मिले इसका प्रयास किया जाता है–जैसे उचित स्थान उपलब्ध कराना, पढ़ाई के लिए कमरा–शेड आदि में मददगार होना और यथा संभव आर्थिक सहयोग देना। इस वर्ष विभिन्न ईट भट्टे के मालिक से करीब रू. 2 लाख चेक द्वारा प्राप्त हुआ। इस प्रकार इस कार्य में उनका सहयोग प्रशंसनीय है। यह संस्था द्वारा प्रेरित करने से हुआ है।

(6) संस्कार निर्माण की दृष्टि से सर्व प्रथम शिक्षक एक दिवसीय विपश्यना शिविर में भाग लेते हैं। बाद में विद्यालय में प्रार्थना एवं मौन अभ्यास प्रतिदिन का अनिवार्य कार्यक्रम है।

(7) दानदाताओं के सहयोग से करीब 525 छात्र–छात्राओं को यूनिफार्म दिये गये।

3. नशा मुक्ति चर्चा

विनोबा ज्ञान मंदिर की सहभागिता से शराब मुक्ति की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। इस कार्यक्रम ऐसे व्यक्ति आते हैं जिन्होंने शराब पीना छोड़ दिया है या छोड़ना चाहते हैं। यह कार्यक्रम शाम को 6 बजे से 7.30 बजे तक चलता है। यह आपसी चर्चा, अनुभव का आदान–प्रदान, शराब पीने का कारण एवं उससे मुक्ति की प्रक्रिया पर आपसी विचार–विमर्श किया जाता है। देखा गया कि जिस परिवार में कोई

व्यक्ति शराब पीने का आदी हो गया है या पीना प्रारम्भ किया है, उस परिवार के सदस्य, शराब पीनेवाले व्यक्ति को लाते हैं और इस प्रेरणा चर्चा में शामिल कराते हैं। यह कार्यक्रम सप्ताह में 3 दिन रविवार, सोमवार और गुरुवार को होता है। सामान्यतः 10 से 20 व्यक्ति इसमें शामिल होते हैं – रविवार को विशेष कार्यक्रम होता है। समीक्षा अवधि में कुल 144 दिन चर्चा कार्यक्रम हुआ। प्रसन्नता की बात है कि एक दिन भी ऐसा नहीं आया जब कार्यक्रम नहीं हुआ। कार्यक्रम के कई वरिष्ठ संभागियों ने अपनी राय बताते हुए कहा कि, ''जयपुर में इस प्रकार के कार्यक्रम अनेक स्थानों पर (सेंट जेवियर, संतोकबा दुर्लभ जी आदि) प्रारम्भ हुआ लेकिन ज्यादा दिन नहीं चला। यह विनोबा ज्ञान मंदिर जैसा पवित्र स्थान ही है जहाँ वर्षों से यह कार्यक्रम नियमित चल रहा है। ऐसे शुद्ध एवं पवित्र स्थान में हम सभी को प्रेरणा मिलती है। यह यहाँ की पवित्रता और शुद्ध वातावरण का ही परिणाम है।''

4. सम्पर्क एवं लोकशिक्षण

सेवा संस्थान ''कासा'' के सहयोग से ग्रामीण लोगों को रोजगार एवं स्वनिर्भरता की दृष्टि से शिविरों का आयोजन ''कासा'' द्वारा किया जाता है। इस कार्यक्रम में चाकसू एवं निवाई ''जन पैरवी मंच'' के लोगों ने भाग लिया। इसका आयोजन ''कासा'' द्वारा किया जाता है। इसका उद्देश्य यह है कि गांव के लोग सरकार की योजनाओं को समझें और उसका लाभ लें। इसमें संस्थान की भागीदारी रहती है।

किसानों को बीज वितरण

5. असमर्थ लोगों को सरकार की योजनाओं को लाभ दिलाने में सहयोग

यह कार्यक्रम पिछले कई वर्षों से चल रहा है और इसकी आवश्यकता सतत् रहती है। ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे लोग हैं जिन्हें सरकार की योजनाओं की जानकारी नहीं है या वे उसका लाभ लेने में असमर्थ है, जैसे – पंचायत समिति से दूर के गांव के लोग, वृद्ध, शिक्षा का अभाव, फार्म भरने में असमर्थता, महिलायें, विकलांग आदि। संस्था की ओर से एक सेवाभावी व्यक्ति को ई–मित्र बना कर लैपटॉप आदि सामग्री दी गयी है। वे गांवों में जाकर ई–मित्र की प्रक्रिया पूरा कर योजनाओं का लाभ दिलाने में मददगार बनते हैं। समीक्षा वर्ष में 707 लोगों को रू. 49.50 लाख का लाभ दिलाया गया। स्पष्ट है ये लाभ सीधे लाभांवित को बैंक के माध्यम से मिलता है।

6. लक्ष्मी निधि सहकारी समिति, निवाई

यह समिति स्वतंत्र रूप से अपने स्तर पर कार्य कर रही है। कुमारप्पा ग्राम स्वराज संस्थान आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन करता है।

निदेशक